श्रीवीतरागाय नमः

ज्ञानसूर्योदय नाटक।

श्रीवादिचन्द्रसूरिविरचित मूलसंस्कृतग्रन्थसे
देवरीनिवासी श्रीनाथूरामप्रेमीने

हिन्दी गद्यपद्यमें अनुवादित किया।

और

बम्बईस्थ—श्रीजैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालयने

बम्बईके—निर्णयसागरप्रेसमें बाळकृष्ण रामचंद्र घाणेकरके
प्रबन्धसे छपाकर प्रकाशित किया।

श्रीवीरनि० सं० २४३५] [ईसवी सन् १९०९

प्रथमावृत्तिः

न्योछावर ॥)

श्रीज्ञानसूर्योदय

ग्रन्थका रहस्य ।

मोहादिक भाव सब उपाधिरूप चेतनके,
दुखदाई जान वृथा चित्त न भ्रमाइये ।
ज्ञानादिक भाव ते तो आपहीके स्वभाव,
तिनको हितकारी जानि चित्तको रमाइये ॥
जिनवानी जोर विना ज्ञानकी न शक्ति कछू,
तातैं जिनवानी विना घरी ना गमाइये ।
ताके अनुसार ध्यान धारि मोहको विडारि,
केवल स्वरूप होय आपमें समाइये ॥

[श्रीभागचन्द्रकवेः]

नाटकपात्र ।

सूत्रधार—नाटकाचार्य ।
नटी—सूत्रधारकी स्त्री ।
प्रबोध—प्रधाननायक ।
अष्टशती—प्रबोधकी स्त्री (श्रीअकलङ्कभट्टकृत न्यायग्रन्थ देवागमकी टीका)

विवेक—प्रबोधका भाई ।
मति—विवेककी स्त्री ।
परीक्षा—प्रबोधकी बहिन ।
पुरुष (आत्मा)—प्रबोधादिका पिता ।
उपदेश—प्रबोधका गुप्तचर ।
सम्यक्त्व—प्रबोधका मन्त्री ।
न्याय—प्रबोधका दूत ।
दया—प्रबोधकी दूसरी स्त्री ।
क्षमा—दयाकी माता ।
शान्ति—दयाकी छोटी बहिन ।
मैत्री—सर्व जीवोंकी हितकारिणी ।
वाग्देवी—सरस्वती देवी ।
अनुप्रेक्षा—अनित्यादि बारह प्रकार ।
मन—वैराग्यका पिता ।
संकल्प—मनका सहचर ।
वैराग्य—मनका पुत्र ।

मोह— } पुरुषके कुमति-
काम— } स्त्रीसे उत्पन्न हुए
क्रोध— } पुत्र ।

रति—कामकी स्त्री ।

हिंसा—क्रोधकी स्त्री ।

राग द्वेष—लोभके पुत्र ।

कलि—मोहका मंत्री ।

दंभ— } मोह राजाके
अहंकार— } सुभट ।

विलास—मोहका दूत ।

बुद्धागम—
याज्ञिक (मींमासक)
नैयायिक—
ब्रह्माद्वैत (वेदान्त) } बुद्धादि धर्मोंके अनुयायी ।
श्वेताम्बर—
कापालिक—
वैष्णव—

इनके सिवाय विद्यार्थी, श्राविका, ध्यान, दासियां, द्वारपाल, सामन्तादि ।

प्रस्तावना।

ज्ञानसूर्योदय नाटक जिसका कि यह हिन्दी अनुवाद आज हम अपने पाठकोंके साम्हने लेकर उपस्थित है, जैन समाजमें बहुत परिचित है। इसकी दो तीन भाषा वचनिकायें भी हो चुकी है। परन्तु वर्तमान समयमें जिस ढंगके अनुवादको लोग पसन्द करते हैं, वचनिकाओंसे उसकी पूर्ति नहीं होती है, और इस कारण इस परमोत्तम नाटकका जैसा चाहिये, वैसा प्रचार नहीं होता है, ऐसा समझकर मैंने यह परिश्रम किया है। इस प्रयत्नमें मुझे कहातक सफलता प्राप्त हुई है, इसका विचार करना विद्वान पाठकोंका काम है।

मूलग्रन्थपरसे यह अनुवाद किया गया है। जहातक बना है, इसे शब्दश. करनेका प्रयत्न किया है। तौ भी कही २ वाक्य रचनाके ख्यालसे अथवा विषयको सरलतासे समझानेके विचारसे इसमे थोड़ा बहुत हेर फेर इच्छा न रहते भी किया है। गर्भांक तथा स्थानादिकी कल्पना प्रकरणके अनुसार मुझे स्वय करनी पड़ी है। पहले विचार था कि, इसका गद्यका गद्यमें और पद्यका पद्यमें अनुवाद किया जाय, और नाटकोंका अनुवाद होता भी ऐसा ही है। परन्तु यह नाटक धर्मसम्बन्धी वादविवादका है, इसलिये इसमें भिन्न २ धर्मोके जो प्रमाण-श्लोक तथा वाक्य दिये गये है, उन्हें ज्योंके त्यों रखना ही उचित समझा गया। इसके सिवाय अनेक श्लोक ऐसे भी देखे गये, जिनका अभिप्राय गद्यमें समझानेसे ही अच्छी तरहसे समझा जा सकता था। उनका पद्यमें अनुवाद न करके गद्यहीमें कर दिया गया है। अच्छे २ श्लोकोंको टिप्पणीमें लगा दिये है, जिससे पाठकगण उन्हें स्मरण रख सकें, और उनके अनुवादमें कुछ भूल रह गई हो, तो सुधार सकें।

पहले इस ग्रन्थमें जितने पद्य बनाये गये थे, वे सब बृजभाषामें थे। परन्तु पीछे अपने एक मित्रकी सम्मतिसे हमने बहुतसे पद्य खड़ी बोलीमें भी बनाकर शामिल कर दिये हैं। यदि यह खिचरी पाठकोंको पसन्द न आई, और इस ग्रन्थका दूसरा संस्करण मुद्रित करानेका अवसर आया, तो उसमें सब कविता एक ही प्रकारकी कर दी जावेगी।

इस ग्रन्थमें जो विषय न्यायका है, उसका अनुवाद जैनसमाजके दो अच्छे विद्वानोंसे संशोधन करा लिया गया है। इसके सिवाय और भी जो संदेहजनक स्थान थे, वे विद्वानोंकी सम्मतिसे स्पष्ट करके लिखे गये हैं। इससे जहांतक मैं समझता हूं, ग्रन्थमें कोई भूल नहीं रही होगी। तो भी यदि भ्रमवशात् कुछ दोष रह गये हों, तो उनके लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूं।

बम्बई. ज्येष्ठ कृष्णा २
वीरनि० २४३५

नाथूराम प्रेमी.

ग्रन्थकर्त्ताका परिचय।

ज्ञानसूर्योदय नाटक श्रीवादिचन्द्रसूरिने विक्रम सवत् १६४८ में मधूक (महुवा?) नगरमें रहकर वनाया है। वे मूलसंघके आचार्य थे, और उनके गुरुवर्यका नाम श्रीप्रभाचन्द्रसूरि था। पुस्तकके अन्तमें जो प्रशस्ति दी है, उससे यह वृत्तान्त विदित होता है। काव्यमालाके तेरहवें गुच्छकमें एक पवनदूत[1] नामका काव्य थोड़े दिन पहले प्रकाशित हुआ है। वह भी श्रीवादिचन्द्रसूरिका वनाया हुआ है, ऐसा उसके अन्तिम श्लोकसे विदित होता है। वह श्लोक यह है;—

पादौ नत्वा जगदुपकृतावर्धसामर्थ्यवन्तौ
विघ्नध्वान्तप्रसरतरणेः शान्तिनाथस्य भक्त्या।
श्रोतुं चैतत्सदसि गुणिना वायुदूताभिधानम्
काव्यं चक्रे विगतवसनः स्वल्पधीर्वादिचन्द्रः॥१०१॥

इसके सिवाय ईडरके भंडारमें एक सुभगसुलोचनचरित नामका काव्य भी इन्हींका वनाया हुआ है, परन्तु वह देखनेके लिये नहीं मिल सका। पांडवपुराण, पार्श्वपुराण, और होलीचरित्र नामके तीन ग्रन्थ भी श्रीवादिचन्द्रसूरिके वनाये हुए हैं, ऐसा डेक्कनकालेज वगैरहकी रिपोर्टोंसे विदित होता है। प्रभाचन्द्रसूरि

---

१ यह काव्य कालिदासके मेघदूतके ढगपर वनाया गया है। इसमे सुग्रीवने सुताराके विरहसे पीडित होकर जो पवनरूपी दूतके द्वारा सन्देशा भेजा है, उसका वडा ही हृदयग्राही वर्णन है। जिस गुच्छकमें यह प्रकाशित हुआ है, उसमें मनोदूत, विल्हणकाव्य, गंजीफा खेलन, धनदशतकत्रय, दूतीकर्मप्रकाश आदि और भी उत्तमोत्तम काव्य सगृहीत हैं। मूल्य १) रुपया है।